यात्रावृत्त

कुछ ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण

- सेठ गोविन्ददास

लेखक-परिचय

सेठ गोविन्ददास (1896 ई-1974 ई.) भारत के स्वतन्त्रता सेनानी तथा हिन्दी के साहित्यकार थे। उन्हें शिक्षा व साहित्य के क्षेत्र में सन् 1961 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रहे। उन्होंने राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रबल समर्थन किया। वे भारतीय संस्कृति के अनन्य साधक, कला-मर्मज्ञ, आदर्श राजनीतिज्ञ, प्रसिद्ध नाट्यकार एवं एकांकीकार थे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं–

नाटक - 'प्रकाश', 'कर्तव्य' एवं 'नवरस'।

एकांकी - 'सप्तरश्मि', 'एकादशी', 'पंचभूत' तथा 'चतुष्पथ'

उपन्यास - 'चंपावती', 'कृष्णलता', 'सोमलता' आदि।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत यात्रावृत्त में चित्तौडगढ़ की वीर भूमि, मोक्षप्रदायिनी अवन्तिका (उज्जैन) नगरी के साथ अजन्ता, एलोरा व एलीफेण्टा गुफाओं की यात्रा का वर्णन है। इसमें वहाँ के अपूर्व सौंदर्य, भारतीय संस्कृति की दिव्यता और प्राचीन ऐतिहासिक महत्त्व को अत्यन्त रोचक ढंग से उभारा गया है। संपूर्ण यात्रा-वृतान्त में रोचकता, प्रवाहमयता व तथ्यपरकता दर्शनीय है। भारतीय सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर के प्रति लेखक का अपनत्व प्रेरणास्पद है।

****

..... चित्तौड़गढ़ स्टेशन के समीप हम एक छोटी सी धर्मशाला में ठहरे और भोजन इत्यादि से निवृत्त हो कोई एक बजे दिन को ही ताँगों पर गढ़ की ओर रवाना हुए। उस समय वहाँ मोटरें इत्यादि नहीं मिलती थीं।

चित्तौडगढ़ को जाते-जाते मेरा हृदय भावनाओं के उद्वेग से उल्लसित हो उठा। टॉड का राजस्थान इतिहास मैंने हाल ही में पढ़ा था और पढ़े थे हिन्दी में दो उपन्यास। एक का नाम था ''राजपूत जीवन संध्या'' जिसमें हल्दीघाटी के रोमांचकारी रण का वर्णन था और दूसरा ''वीर जयमल''। यहीं महाराणा साँगा और महाराणा प्रताप, वीर जयमल और उन्हीं के सदृश अगणित सरदारों तथा सैनिकों ने केवल जीतते हुए नहीं पर हारते हुए संग्रामों को भी ऐसी बहादुरी से लड़ा था जैसे संग्राम-संसार के किसी देश में कभी भी लड़े, क्या सुने तक नहीं गए। केसरिया बाना पहन-पहन कर यहीं वीरों ने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए प्राणों को तुच्छ मान हँसते-हँसते अपना बलिदान देकर वीर के साथ ही हुतात्मा पद को प्राप्त किया था। साध्वी वीर माताओं, वीर भगिनियों, वीर पत्नियों, वीर पुत्रियों की संख्या दो, चार, दस, सौ, दो सौ, चार सौ न होकर हजारों थीं हजारों। यहीं भामाशाह के सदृश त्यागी वैश्य भी हुए थे जो मेवाड़ के महावीर थे, साथ ही महान् हुतात्मा

सूर्यवंशी सिसोदिया क्षत्रिय नर-नारियों ने जहाँ संसार के इतिहास की अभूतपूर्व तथा अद्वितीय शौर्य और जौहर की अमर गाथाएँ गढ़ीं थीं वहीं आज हम जा रहे थे।

चित्तौड़गढ़ एक पहाड़ी पर है। जैसे-जैसे ताँगा इस पहाड़ी पर चढ़ता जाता था, मेरी आतुरता वहाँ की वस्तुओं को देखने के लिए बढ़ जाती थी। आखिर हम चित्तौड़गढ़ में पहुँचे। गढ़ की दीवारें और उनके बुर्ज खंडित हो गये हैं। करीब-करीब सारी इमारतें जमींदोज। उन खण्डहरों के बीच खड़े हैं दो स्तम्भ ''कीर्ति-स्तम्भ'' और ''विजय-स्तम्भ''। कीर्ति-स्तम्भ पुराना और जर्जर है परन्तु विजय-स्तम्भ उसके बाद का साथ ही वीरता के इतिहास का सच्चा प्रतीक है। इस सात खण्डों वाले विजय-स्तम्भ को देखकर मुझे भारी हर्ष हुआ। कला और सौन्दर्य की दृष्टि से भी यह विजय-स्तम्भ अपूर्व है, फिर उसी महान् वीरता का इतिहास इस विजय-स्तम्भ के साथ है। यद्यपि इस गढ़ में देखने योग्य बहुत कम रह गया है तथापि मुझे तो इसका एक-एक पत्थर, इसकी धूलि का एक-एक कण, भिन्न-भिन्न प्रकार से भिन्न-भिन्न ध्वनियों में भिन्न-भिन्न रागों द्वारा वीर-गाथाएँ गाते जान पड़े। इन पत्थरों पर मुझे उस काल की पढ़ी और सुनी हुई एक-एक घटना नृत्य करती-सी जान पड़ी। यद्यपि वहाँ की देखने लायक चीजों को हम लोग थोड़ी ही देर में देख चुके, परन्तु मैं तो संध्या पूर्व उस स्थल को छोड़ ही न सका। इधर से उधर और उधर से इधर न जाने कितने बार आवारा-सा, भूला-सा, घूमता-फिरता रहा। एक-एक जगह को न जाने कितनी बार देखा। मेरी ऐसी दशा अब तक की यात्रा में कभी न हुई थी और न इसके बाद ही हुई। मेरे साथियों को मेरी मुद्रा और दशा पर कुछ आश्चर्य भी हुआ, कुछ लोग हँसे भी, कुछ ने कुछ मजाक भी उड़ाया, परन्तु मैं तो अपने आप में नहीं था। जब अँधेरा होने लगा तब साथियों ने जोर देकर वहाँ से चलने को कहा। चलने के पूर्व इस स्थान की धूलि लेकर बार-बार मैंने अपने मस्तक पर लगायी और जिस प्रकार बड़े-बड़े उत्सवों पर मैं मन्दिर में भगवान् को साष्टांग दंडवत प्रणाम करता था, उसी प्रकार प्रणाम मैंने उस पवित्रतम विजय स्तम्भ को किया। प्रणाम के उपरान्त मैंने हाथ जोड़ मन ही मन प्रार्थना की कि जिन वीरों की अपूर्ण कृतियों का यह विजय-स्तम्भ प्रतीक है, उनकी कृतियों में जो शौर्य, जो त्याग, जो कष्ट-सहिष्णुता थी मुझे भी उसका परमाणु अंश बराबर तो प्राप्त हो। जीवन में अनेक जोखिमों के अवसरों पर मुझे यह विजय-स्तम्भ याद आया है और इस स्मरण ने मुझे नव साहस और नवीन स्फूर्ति प्रदान की है।

चित्तौड़गढ़ छोड़ने के पहले हमने वह स्थान भी देखा जहाँ वीर जयमल को गोली लगी थी और उन्होंने वीरगति प्राप्त की थी। इस स्थल के दर्शन से हृदय और अधिक गद्‌गद् हो गया।

रात्रि को रवाना होने के पहले हमारा भोजन स्टेशन के निकट बना था कुछ वृक्षों की झुरमुट में और यह था मेरा प्रिय भोजन दाल-बाटी-चूरमा, पर लाख प्रयत्न करने पर भी आज ये कौर मेरे गले न उतरते थे।

चित्तौड़ से हम उज्जैन आये, सप्त मोक्षदायिका पुरियों में एक पुरी अवन्तिका। ऐतिहासिक दृष्टि से भी भारतवर्ष के गौरवपूर्ण समयों की यह एक राजधानी थी, परन्तु महाकालेश्वर के एक नवीन मन्दिर के सिवा यहाँ हमें क्षिप्रा के अतिरिक्त विक्रमादित्य या भोज के काल की कोई वस्तु न मिली। हमारी इस यात्रा का उद्देश्य तीर्थाटन न होकर ऐतिहासिक वस्तुओं का निरीक्षण था। हम अपना असबाब स्टेशन पर ही छोड़ गये थे।

अतः क्षिप्रा के जल का आचमन और महाकालेश्वर के दर्शन कर हमने कुछ घण्टों में जलगांव के

लिए उज्जैन छोड़ दिया।

जलगांव हम आये थे अजन्ता और एलोरा गुफाएँ देखने। हमारे यहाँ ठहरने की व्यवस्था माहेश्वरी समाज के एक सुधारक कार्यकर्ता श्री रूपचन्द जी लाठी ने की थी। उन्होंने हमारे अजन्ता और एलोरा जाने के लिए किराये की एक लारी मोटर का भी प्रबंध किया था।

जलगांव से लारी पर हम सीधे अजन्ता गए। अजन्ता की गुफाएँ सुन्दर और हरे-भरे पार्वत्य प्रदेश में हैं। इन गुफाओं की संख्या 29 है। इनमें 4 ''चैत्य'' के ढंग की और शेष ''विहार'' ढंग की हैं। ये गुफाएँ एक साथ नहीं बनायी गयीं। यद्यपि इनके बनने का निश्चित समय ज्ञात नहीं, परन्तु पुरातत्त्वेत्ताओं के मत से ईसा के सौ वर्ष पूर्व से सात सौ वर्ष बाद तक ये बनती रहीं, कोई कभी और कोई कभी। गुफाएँ इनकी अदभुत चित्रकारी के कारण सारे संसार में प्रसिद्ध हो गयी हैं।

ये गुफाएँ एक अर्धगोलाकार पहाड़ी के मध्य भाग की चट्टानों को काट कर बनायी गयी हैं। कैसी अदभुत बात है कि एक ही शिलाखंड को काटकर उसके अन्दर कमरे और उनमें मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। कमरों की दीवारों पर पलस्तर चढ़ाकर तथा सफेदी करके उस पर सुन्दर चित्र बनाये गये हैं। पलस्तर इतना मजबूत और सुन्दर है कि कई शताब्दियों के पश्चात् आज भी हम उसे ज्यों का त्यों पाते हैं।

बोधिसत्त्व पद्म-पाणि अर्थात् कमल पुष्प लिए हुए भगवान बुद्ध का चित्र, बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्र है। सिर पर मुकुट धारण किए हुए सिद्धार्थ खड़े हैं। बायें हाथ में एक सूत का धागा बँधा है और दाहिने हाथ में कमल पुष्प है। शरीर पर मोटा यज्ञोपवीत और गले में मणिमाला है। पतली लम्बी भवों के नीचे अधखुले विशाल नेत्रों से अहिंसा, शान्ति तथा वैराग्य टपकता है। उनकी मुखाकृति गम्भीर और देवीज्योति से आलोकित है। कैसा मनोहर रूप, कैसे ढले हुए-से सारे अंग-प्रत्यंग और अवयव। कैसी चित्रकारी। घण्टों चित्र की ओर देखते रहिए, आँखें और मन तृप्त न होंगे। कहा जाता है इससे सुन्दर आकार आज तक दुनिया में चित्रित नहीं हुआ। इस चित्र के विषय में देवी निवेदिता लिखती हैं- ''यह चित्र सम्भवतः भगवान् बुद्ध का सबसे बड़ा कल्पनात्मक प्रदर्शन है। ऐसी अद्वितीय कल्पना का पुनः साकार हो सकना असम्भव-सा ही है।''

गुफा का एक और महत्त्वपूर्ण चित्र एक राजकीय जुलूस का है, जिसमें बहुत से आदमी सजधजकर जाते दिखाये गए हैं। किसी के हाथ में छाता है तो किसी के हाथ में बजाने का शृंगी बाजा है। जुलूस में स्त्री-पुरुष दोनों सम्मिलित हैं। चित्र अलंकार–प्रधान है। स्त्रियों के हाथों में सुन्दर कंकण हैं तथा वे गले में हार पहने हैं। कान से लगे सुन्दर कर्णावतंस भी लटक रहे हैं। स्त्रियों की कमर लचीली और पतली है। उनके उभरे हुए वक्षःस्थल कुछ सूक्ष्म वस्त्रों से स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। उनकी गर्दनें तिरछी और मुद्राएँ कटाक्षपूर्ण हैं। कनखियों से देखती हुई यौवन-मद और अनुराग-लिप्सा से परिपूर्ण वे जीवन-तापहारी लतिकाओं-सी जान पड़ती हैं।

अजन्ता की चित्रकला में स्वाभाविकता है, जीवन है, सादगी है, साम्य है, औचित्य है और सौन्दर्य-भावना है। कुरुचि का अथवा वीभत्सता का लेशमात्र उनमें नहीं है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि अजन्ता के चित्रों में अंकित व्यक्तियों में चाहे वह धनाढ्य है, भूपति है अथवा निर्धन गृहस्थ है, चाहे पुरुष है अथवा स्त्रियाँ हैं, उन सब में जीवन के प्रति आनन्द-भावना है, उनके हृदय में जीवन के प्रति एक सुखमयी लिप्सा है, जिसे सभी कलामर्मज्ञों ने स्वीकार किया है। यही कारण है कि अजन्ता के चित्र संसार भर में अद्वितीय

हैं। उनमें भारतीय जीवन की, उसके विराग-अनुराग की, उसकी आशाओं-निराशाओं की, उसकी क्षमताओं-व्यथाओं की झलक तो है ही उनमें भारतीय संस्कृति का चरम आदर्श भी परिलक्षित हुआ है। आनन्द-भावना ही भारतीय जीवन का साध्य और साधन रही है।

अजन्ता की 29 गुफाओं में से दो अगम्य हैं बाकी सभी देखी जा सकती हैं।

इनके विषय में एक बड़ी कठिनाई है काल-निर्णय की। समय-समय पर विविध राजाओं की सरंक्षकता में इन्हें बनाया गया होगा, ऐसा अनुमान है, क्योंकि कुछ चित्र अत्यन्त प्राचीन और कुछ अर्वाचीन जान पड़ते हैं। अजन्ता का एक चित्र काल निर्णय में कुछ सहायक है। यह चित्र है फारस देश के राजदूत का जो फारस के राजा की ओर से कोई भेंट प्रस्तुत करता दिखाया गया है। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि गुप्तकाल से लेकर चालुक्य वंश के शासन-काल तक इन गुफाओं का निर्माण हुआ होगा।

अजन्ता से हम मोटर लारी में ही दौलताबाद गए और दौलताबाद से एलोरा।

एलोरा की गुफाएँ भी शिलाखंड में काटकर बनायी गयी हैं। शिलाखंड ही क्यों कहना चाहिए एक छोटे-मोटे पठार को काट इन गुफाओं को बनाया गया है। अनुमान कीजिए ये गुफाएँ सवा मील तक चली गयी हैं, जिनके बनाने में न मालूम कितना परिश्रम हुआ होगा और न मालूम कितना समय लगा होगा।

इस गुफा-शृंखला के तीन मुख्य अंग है : बौद्ध गुफाएँ, हिन्दू गुफाएँ और जैन गुफाएँ। बौद्ध गुफाओं की संख्या बारह है और अनुमान है कि वही सबसे पहले की बनी हैं। उनकी खुदाई चौथी से आठवीं शताब्दी के बीच हुई। हिन्दू गुफाओं की संख्या सत्रह है। ये बीचों-बीच बनी हुई हैं और अनुमान है कि इनकी खुदाई सातवीं और आठवीं शताब्दी में हुई। अन्तिम गुफाएँ, जिनकी संख्या चार है, जैन गुफाएँ हैं, जिनकी खुदाई हिन्दू गुफाओं के बाद ही हुई होगी।

प्रारम्भिक बौद्ध गुफाएँ बिल्कुल सादी है। पर दसवीं गुफा, जो विश्वकर्मा गुफा के नाम से प्रसिद्ध है, उल्लेखनीय है। बारहवीं गुफा, जो तीन तल गुफा के नाम से प्रसिद्ध है, एक तिमंजिली गुफा है। यहाँ पर जो मूर्तियाँ अंकित हैं वे आकार, धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति और सजावट की दृष्टि से अनुपम बनी हैं।

विश्वकर्मा गुफा का भीतरी भाग सँकरा होता गया है और अन्त में 27 फुट लम्बा और साढ़े पन्द्रह फुट चौड़ा रह गया है। वहाँ पर आसीन ग्यारह फुट की ऊँची भगवान् बुद्ध की विशाल मूर्ति है।

तीन तल गुफा मनुष्य के सतत् प्रयत्न और धैर्य का उत्कृष्ट नमूना है। कितने परिश्रम और कितनी लगन से पाषाण खंड काटकर यह तिमंजिली कला-कृति खड़ी की गयी होगी। अकेले अर्थ व्यय से सम्भवतः यह कार्य सम्पन्न होना कठिन था। मुझे इसके पीछे मनुष्य की कर्तव्य-निष्ठा और आस्था की झलक दिखायी दी, जिसके बिना मेरे विचार में कोई महान् कार्य पूरा करना सम्भव नहीं।

इस गुफा में जो बुद्ध की मूर्ति है उसके विषय में एक रोचक बात बताना जरूरी है। स्थानीय निवासी उसे राम मानकर पूजते हैं। इस मूर्ति की नाक और ओंठ आदि नहीं है पर स्थानीय निवासी एक टूटते ही पलस्तर की दूसरी नाक चढ़ा देते हैं । भक्ति का मुझे यह अनोखा रूप जान पड़ा और बुद्धिवादी भले ही तर्क की शरण लें, किन्तु मुझे वे स्वल्पबुद्धि वाले; किन्तु श्रद्धालु स्थानीय जन ही भगवान् के अधिक निकट जान पड़े जो किसी भी रूप में सर्वशक्तिमान को ही पूजते हैं।

हिन्दू गुफाओं में 16वीं गुफा जिसे कैलाश अथवा रंगमहल गुफा कहते हैं शिव की गुफा है, किन्तु इसमें विष्णु का और अन्य पौराणिक विभूतियों के चित्र अंकित हैं। इसमें ध्वज-स्तम्भ और हाथी की मूर्ति भी

दर्शनीय है। भारत में पाषाण खण्ड में बनी हुई इतनी विशाल गुफा दूसरी नहीं है। यह गुफा 276 फुट लम्बी 154 फुट चौड़ी और 107 फुट ऊँची है। इससे गुफा के भीमकाय आकार का अनुमान लगाया जा सकता है। शिलाखण्ड में काटकर बनाया गया हिन्दुओं का इतना विशाल मन्दिर भारत में दूसरा नहीं है। इक्कीसवीं गुफा जो रामेश्वर गुफा कहलाती है और 29वीं गुफा जो सीता गुफा कहलाती है, कला और पच्चीकारी की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण एवम् उल्लेखनीय है।

एलोरा से फिर हम दौलताबाद लौटे और दौलताबाद से पुनः अजन्ता आकर एक बार फिर पद्म-पाणि भगवान् बुद्ध के चित्र के दर्शन कर जलगांव लौट आये। जलगांव में हमें एक दिन और ठहरना पड़ा क्योंकि श्री रूपचंद जी लाठी ने हमारे सम्मान में एक पार्टी रखी थी।

जलगांव से हम बम्बई पहुँचे। हमारा उद्देश्य बम्बई देखना न था, बम्बई तो मैं कई बार हो ही आया था। यहाँ हम आये थे एलीफेण्टा गुफाएँ देखने।

एलीफेण्टा गुफाओं के विषय में हाथी की एक मूर्ति का जिक्र होता है, जिसका अपना इतिहास है। सन् 1814 में इस हाथी का सिर टूट कर गिर गया और बाद में उसका शेष अंग भी कई भागों में कट गया। सन् 1864 में इस मूर्ति के खण्डित अंगों को विक्टोरिया बाग बम्बई ले जाया गया, जहाँ इसको पुनः जोड़ा गया। कहा जाता है कि इस हाथी के अंग्रेजी पर्याय एलीफेण्ट के नाम पर ही पुर्तगालियों ने इन गुफाओं को एलीफेण्टा गुफाओं की संज्ञा दी।

ये गुफाएँ एपालो बन्दर से कोई सात मील पश्चिमोत्तर में एक द्वीप पर स्थित हैं, जिसे स्थानीय निवासी और मल्लाह घरपुरी कहते हैं। इसका घेरा कुल मिलाकर साढ़े चार मील से अधिक नहीं। इसमें दो पहाड़ियाँ है, जिनके बीच एक मनोरम घाटी है। द्वीप के निवासियों की संख्या बहुत कम है।

आकार की दृष्टि से यह द्वीप चाहे छोटा हो, पर इसका इतिहास बड़ा रोचक रहा है। मौर्य, चालुक्य और राष्ट्रकूट राजाओं का इस पर आधिपत्य था। सन् 1534 में इस पर पुर्तगालियों ने अधिकार किया। सन् 1774 में अँग्रेजों ने इसे अपने शासन में लिया और सन् 1775 में बादशाह एडवर्ड सप्तम को, जो उस समय प्रिंस ऑफ वेल्स थे, इस द्वीप पर दावत दी गयी थी।

किन्तु इस द्वीप की महत्ता का आधार इसका इतिहास न होकर वहाँ की तक्षणकला और वहाँ की अद्‌भुत गुफाएँ हैं। इन गुफाओं का निश्चित रूप से काल निर्णय करना तो असम्भव-सा है, पर हाँ, इतना अवश्य ज्ञात है कि सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ये विद्यमान थीं।

एलीफेण्टा की गुफाएँ मुख्यतः शैव हैं और इनमें सबसे प्रसिद्ध शिव का मन्दिर है जो एक गुफा में खोदा गया है। यहाँ भगवान् शिव को सर्जनहार, पालनहार और प्रलयंकर तीनों रूपों में अंकित किया गया है। शिव के तांडव नृत्य का एक मनमोहक दृश्य है और एक शिला पर शिव को भावमग्न भी अंकित किया गया है। शिव को नटराज के रूप में अंकित करने वाले एक दृश्य में उनके उस सर्जनकारी नृत्य की अभिनव छवि है, जिसे ब्राह्मण कला में इतना उच्च स्थान प्राप्त है। शिव-पार्वती विवाह, गंगावतरण, अर्धनारीश्वर शिव, मानवती पार्वती आदि के अनेक छवि–दृश्य हमने मनोयोगपूर्वक देखे। इन प्रतिमाओं में सबसे प्रसिद्ध शिव की प्रतिमा है।

एलीफेण्टा से हम बम्बई लौटे। बम्बई से हमारा विचार बीजापुर जाकर गोल गुम्बज देखने का और था। उसकी बड़ी प्रशंसा सुनी थी, परन्तु जबलपुर के कुछ ऐसे तार और पत्र मिले कि इस दौरे को अब मुझे

समाप्त कर जबलपुर लौटना पड़ा। इसके बाद गोल गुम्बज देखने का मुझे अब तक सौभाग्य प्राप्त न हो सका, यद्यपि मैं सारे संसार के अधिकांश भाग में चक्कर लगा आया हूँ। एक कहावत है ''अनी चूके बीसा सौ'' वही इस मामले में हुआ।

* * * *

शब्दार्थ -

उद्वेग	–	आकुलता	सदृश	–	समान
अद्वितीय	–	जिसके समान दूसरा न हो	तुच्छ	–	हीन
बुर्ज	–	गुम्बद	यज्ञोपवीत	–	जनेऊ
जमींदोज	–	विनष्ट	पुरी	–	नगरी
लिप्सा	–	इच्छा	आलोकित	–	प्रकाशित
महाभिनिष्क्रमण	–	गृहत्याग	तक्षणकला	–	मूर्तिकला
असबाब	–	सामान	परिलक्षित	–	दिखाई देना
कर्णावतंस	–	कान के आभूषण	अवयव	–	अंग
तृप्त	–	सन्तुष्ट	अर्वाचीन	–	नवीन
पाषाण	–	पत्थर			

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. निम्नांकित में से कौन सा शहर क्षिप्रा नदी के तट पर बसा हुआ है?

   (क) बनारस (ख) जबलपुर

   (ग) उज्जैन (घ) चित्तौड़गढ़ ( )

2. एलीफेण्टा की गुफाओं के मध्य में किसकी मूर्ति का जिक्र होता है?

   (क) हाथी की (ख) भगवान विष्णु की

   (ग) पद्म-पाणि बुद्ध की (घ) माता दुर्गा की ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. महाकालेश्वर मंदिर कहाँ स्थित है?
2. विजय-स्तंभ किसका प्रतीक है?
3. अजंता की गुफाओं की संख्या बताइए।
4. बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का चित्र कहाँ अंकित किया गया है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

1. लेखक ने चित्तौड़गढ़ की धूलि को बार-बार मस्तक से क्यों लगाया?

2. एलीफेण्टा की गुफाओं में शिव को किस-किस रूप में अंकित किया गया है? स्पष्ट कीजिए।
3. अजंता की गुफाओं में 'राजकीय जुलूस' के चित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. 'बोधिसत्त्व पद्मपाणि' चित्र के बारे में देवी निवेदिता के विचार लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न -

1. अजंता की चित्रकला में भारतीय संस्कृति का आदर्श किस तरह प्रकट होता है? वर्णन कीजिए।
2. अजंता, एलोरा व एलीफेण्टा की गुफाओं के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. चित्तौड़गढ़ के दुर्ग का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है? लिखिए।

****